MODEL QUESTION PAPER SET- 1 : 2021 - 22

STD 10TH – HINDI COMPOSITE- (THEORY)

MM : 40 **SOLUTION** **Time : 2 Hrs**

ENTIRE SYLLABUS :

विभाग १ – गद्य १२ अंक

प्र.१. (अ) निम्नलिखित पठित परिच्छेद पढ़कर सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए: **[६]**

१. आकृति पूर्ण कीजिए : **(२)**

(i) साधु ने दूर से इनको आते देखा - सेठ को

(ii) नगर का सबसे बड़ा यह साधु के पास आ रहा था - करोड़पति

(iii) महाराज जैसे भी हो, इसे जीवनदान दीजिए - सेठानी को

(iv) सेठ को साधु पर यह हो गया - विश्वास

२. निम्नलिखित वाक्यों को घटनाक्रम के अनुसार लिखिए : **(२)**

(i) सेठानी का बीमार होना।

(ii) सेठ जी द्वारा सेठानी को साधु के पास ले जाना।

(iii) सेठ द्वारा साधु के चरण पकड़ लेना।

(iv) धीरे-धीरे सेठानी की तबियत सुधरना।

३. "स्त्री घर की लक्ष्मी होती है' विषय पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। **(२)**

मानव संसार में स्त्री का बड़ा महत्व है। स्त्री को घर की लक्ष्मी माना जाता है। लोग सोचते हैं कि आने वाली पत्नी उसका सौभाग्य लेकर आएगी, जिससे उसकी किस्मत बदल जाएगी। स्त्री सभी प्रकार के सुखों को देने वाली होती है। चाहे संतान हो, उत्तम परोपकारी काम हो, विवाह हो या फिर बड़ों की सेवा, ये सभी सुख स्त्रियों के ही अधीन हैं। स्त्री कभी माँ के रूप में, कभी पत्नी और कभी आध्यात्मिक कार्यों की सहयोगी के रूप में जीवन को सुखद बनाती है। जिस घर की स्त्रियाँ सुखी हैं, जहाँ उनका आदर किया जाता है, उस घर में साक्षात महालक्ष्मी निवास करती हैं। जिस घर में स्त्रियों का सम्मान नहीं होता, उन्हें दुख दिया जाता है, माँ लक्ष्मी उस घर नाता तोड़ लेती हैं। अतः पुरुषों को घर की स्त्रियों का भली-भाँति सत्कार करना चाहिए।

प्र.१. (आ) निम्नलिखित पठित परिच्छेद पढ़कर सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए: **[६]**

मंत्री: महाराज, लोगों की पहली शिकायत यही है कि पानी अब निर्मल नहीं रहा है। यह नदियों और गहवरों में बहते समय गंदगी और बीमारियाँ अपने साथ बहाकर सब जगह पहुँचा देता है।

पानी: महाराज, ये लोग पहले की तरह पानी की रखवाली नहीं करते हैं। पशुओं को जोहड़ के भीतर तैरने छोड़ जाते हैं। पशु अपनी गंदगी तालाब में छोड़ जाते हैं। गाँव की दूसरी गंदगी भी तालाब में फेंक दी जाती हैं। नदियों में कारखानों की गंदगी व शहर के गंदे नाले का पानी छोड़ा जाता है। महाराज, मैं अपने आप गंदा नहीं होता। मुझसे शिकायत करने वाले ही गंदा और दूषित करते हैं।

१. संजाल पूर्ण कीजिए: **(२)**

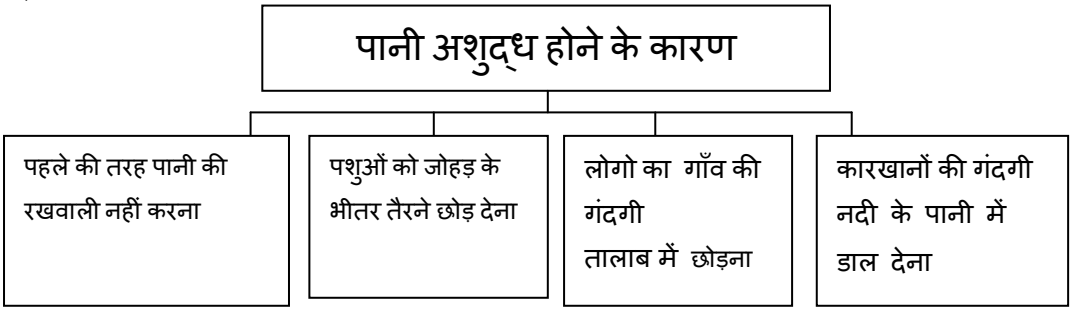

२. **i.** निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बना **(१)**

१. निर्मल - निर्मलता २. शहर- शहरी

ii. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलकर लिखिए: **(१)**

१. बीमारियाँ - बीमारी २. शिकायत-शिकायतें

३. 'बढ़ते हुए प्रदूषण को रोकने के उपाय', इस पर अपने विचार लिखिए। **(२)**

→ प्रदूषण एक प्रकार का धीमा जहर है, जो हवा, पानी धूल आदि के माध्यम से न केवल मनुष्य बल्कि पेड़-पौधो पशु-पक्षियों, वनस्पतियों को भी नष्ट कर देता है। इसे रोकने के लिए कारखानों की स्थापना शहरी क्षेत्र से दूर, चिमनियों की ऊँचाई आधिक और उनमें फिल्टर का प्रयोग करना चाहिए.

सड़कों के किनारे अधिक से अधिक वृक्ष लगाने चाहिए। ये पौधे प्रदूषण नियंत्रण का काम कराते हैं। कारखानों में निकले अवशिष्ट पदार्थों की नहीं, तालाब व झीलों में न डाला जाऊ जिन तालाबों का जल पीने के काम लाया जाता है, उनमें कपड़े, जानवर आदि नहीं होने चाहिए। बनों की अनियंगित कहाई पर रोक लगाई बानी चाहिए। कृषि के लिए जैविक खाद, प्लास्टिक के स्थान पर कागज व कपड़े के थैलों का प्रयोग करें| रिचार्ज रिसायकल जैसी आदतों को अपनाना चाहिए| घर में टीवी, संगीत साधनों की आवाज हलकी रखें। कार के हॉन, लाउड स्पीकर के प्रयोग पर रोक लगाई जाए | प्रदूषण संबंधी सभी कानूनों का सख्ती पालन करें।

विभाग २ – पद्य ८ अंक

प्र. २. (अ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए: **[४]**

१. **i.** एक शब्द में उत्तर लिखिए: **(१)**

१. कस्तूरी की खोज करने वाला -मृग

२. किनारे पर बैठा रहने वाला - बौरा (बावरा)

ii. सही/गलत पहचानकर गलत वाक्यों को सही करके पुनः लिखिए: **(१)**

१. कबीरदास जी अपने ईश्वर को अपने हृदय में बंद कर लेना चाहते हैं।

→ गलत वाक्य

सही वाक्य: कबीरदास जी अपने ईश्वर को अपने नैनो में बंद कर लेना चाहते हैं,

२. ईश्वर का वास घट-घट में है।

→ सही वाक्य

२. पद्यांश की प्रथम दो पंक्तियों का सरल अर्थ लिखिए। **(२)**

→ जाको राखे साइयाँ, मारि न सक्के कोय|
बाल न बाँका करि सकै, जो जग बैरी होय||

प्रस्तुत पंक्तियों संत कबीर रचित 'जिन ढूँढा' में कवि कहते हैं, ईश्वर जिसकी रक्षा करते है, उसे कोई नहीं मार सकता। भले ही सारा संसार ऐसे व्यक्ति का दुश्मन हो जाए तब भी कोई उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता|

प्र.२. (आ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए: [४]

१. संजाल पूर्ण कीजिए: **(२)**

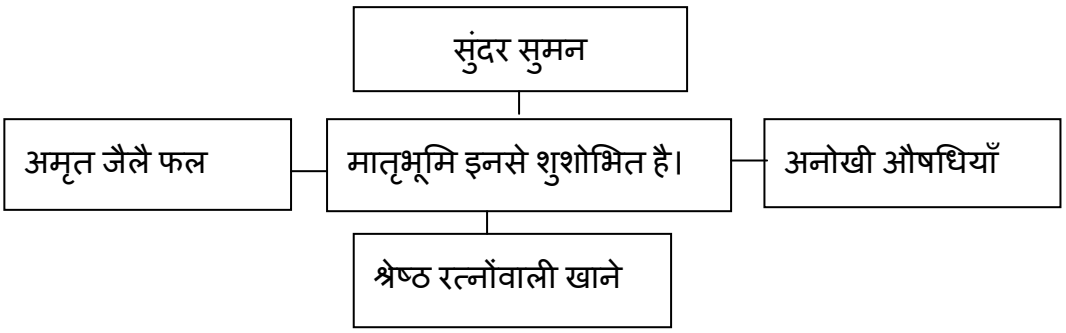

२. पद्यांश की अंतिम दो पंक्तियों का सरल अर्थ लिखिए। **(२)**

जो आवश्यक होते हमें, मिलते सभी पदार्थ हैं।
हे मातृभूमि वसुधा-धरा, तेरे नाम यथार्थ हैं।

'मातृभूमि' कविता में इन पंक्तियों के माध्यम से कवि मैथिलीशरण गुप्त जी बतातें हैं की, जीवन के लिए आवश्यक सभी पदार्थ यहाँ बहुतायत से प्राप्त है। हे मातृभूमि, तुम वसुधा और धरा संज्ञाओं को वास्तव में चरितार्थ करती हो।

विभाग ३ - भाषा अध्ययन (व्याकरण) ८ अंक

प्र. ३. सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए:

१. वर्तनी के नियमों के अनुसार शुद्ध शब्द छाँटकर लिखिए: **(१)**

i. मुश्किल

ii. इकट्ठा

२. निम्नलिखित अव्यय शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए: **(दो में से कोई एक)** **(१)**

i. एवं - गद्य साहित्य की सबसे सशक्त <u>एवं</u> लोकप्रिय विधा है।

ii. के लिए - सरकार जनता <u>के लिए</u> कुछ नही कर रही।

३. कृति पूर्ण कीजिए: **(१)**

संधि शब्द	संधि विच्छेद	भेद
व्यर्थ	<u>वि + अर्थ</u>	<u>व्यंजन संधि</u>

४. अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए उचित मुहावरे का चयन करके वाक्य फिर से लिखिए: (१)

→ गलत संगत में रहने के कारण अच्छे-अच्छे लोग मौत के मुँह में चले जाते है।

५. i. निम्नलिखित वाक्य का कालभेद पहचानिए: (१)

वह बचपन के अपने कमरे में घुसा। - सामान्य भूतकाल

ii. निम्नलिखित वाक्य का सूचनानुसार काल परिवर्तन कीजिए: (दो में से कोई एक) (१)

→ १. उसके हाथ अतिरिक्त रोमांच से काँपते है | (सामान्य वर्तमान काल)

→ २. मुझे अकेले यात्रा करने में आनंद आएगा । (सामान्य भविष्य काल)

६. i. रचना के आधार पर वाक्य का भेद पहचानिए: (१)

→ कुछ पौधे तो चुपचाप मुसकरा रहे थे। - सरल वाक्य

ii. निर्देशानुसार अर्थ के आधार पर वाक्य का परिवर्तन कीजिए: (१)

→ खोया हुआ आदमी नहीं मिला। (निषेधार्थकवाक्य)

विभाग ४ - उपयोजित लेखन १२ अंक

प्र. ४. सूचना के अनुसार लिखिए:

(अ) १. पत्र-लेखन: (४)

३ जनवरी, २०२२
मोहन दोषी,
२०७- दोषी भवन,
पी.के. रोड, ठाणे।

पूज्य चाचा जी,

सादर प्रणाम ।

आपका स्नेहपूर्ण पत्र, शब्दकोश और घड़ी मिली। अपने जन्मदिन पर आपकी शुभकामना साकार घड़ी के रूप में पाकर बहुत खुश हूँ। चाचा जी आपकी भेजी हुई घड़ी मुझे बहुत पसंद है। सच कहूँ तो मैं कई दिनों से ऐसी घड़ी खरीदना चाह रही थी आपका यह उपहार मुझे आपकी सीख 'समय के साथ चलो वरना, पीछे रह जाओगे' याद दिलाती है।

चाचा जी जन्मदिन के समारोह में मेरी सभी सहेलियाँ आई थीं। सभी ने मेरी घड़ी की बहुत तारीफ की। इसका सिल्वर बेल्ल तो सबको बहुत पसंद आया। शब्दकोश भी मेरी आवश्यकता थी। इस अवसर पर आप और चाची जी आते तो और आनंद आता छुट्टियों में आप लोग सूरत अवश्य आइए। एक बार फिर इतने अच्छे उपहार के लिए धन्यवाद।

चाची जी को प्रणाम तथा छोटी देविका को प्यार।

आपकी स्नेहाभिलाषिणी,

नियति दोषी,
वराछा रोड, सूरत।
niyati93doshi@xxxxxx

अथवा

पत्र-लेखन

१० जनवरी २०२२

सेवा में,

प्रबंधक,

पंजाब नेशनल बैंक,

बदलापुर,

ठाणे।

विषय: बैंक मे नया बचत खाता खोलने हेतु।

महोदय,

मैं आपके बैंक में अपने नाम से एक बचत खाता खोलना चाहती हूँ। मैने आपके बैंक की कई आकर्षक योजनाओं, अच्छी ब्याज दरों एवं ऑनलाइन सेवाओं के बारे में सुन रखा है। आपके बैंक की शाखाएँ भी जगह-जगह फैली हुई है। अतः आपसे निवेदन है कि कृपया खाता खोलने के लिए आवश्यक कागजात के विषय में उचित जानकारी एवं मार्गदर्शन दे।

धन्यवाद!

भवदीया,

सोनिया हर्षे,

४०५, राधेश्याम अपार्टमेंट,

बदलापुर,

ठाणे।

soniaharshey99(@******

२.कहानी-लेखन: **(४)**

निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर लगभग ६० से ७० शब्दों में कहानी लिखकर उससे मिलने वाली सीख लिखिए व उसे उचित शीर्षक भी दीजिए**:**

सकारात्मक सोच का असर

डॉक्टर और अस्पताल का नाम लेते ही सौरभ की नानी मरती थी, लेकिन आजकल अपनी और छोटी बहन तृषा के बुखार के चलते उसे अस्पतालों के चक्कर काटने पड़ रहे थे। सौरभ जब भी डॉक्टर को देखता, उसकी आँखें अपने आप मूँद जाती थीं। इंजेक्शन लगने पर तृषा भी खूब चीखती-चिल्लाती थी। दवा खाने के लिए उसे घंटों मनाना पड़ता था। जिस अस्पताल में सौरभ और तृषा भर्ती थे, उसी में बगल का बिस्तर एक दस साल की बच्ची को मिला हुआ था। सौरभ और तृषा यह देखकर दंग थे कि वह बच्ची हँसते-हँसते दवाइयाँ खाती थी और इंजेक्शन लगने पर जरा भी नहीं रोती थी।

एक दिन एकांत पाकर सौरभ और तृषा के पूछने पर उस बच्ची ने बताया, "मैं दवाइयाँ नहीं खाऊँगी और इंजेक्शन नहीं लगवाऊँगी तो ठीक कैसे होऊँगी**!** तुम्हें भी जल्दी घर जाना है तो दवाइयाँ समय पर खाया करो।" सौरभ ने उत्सुकता जाहिर की, "इंजेक्शन लगने पर तुम्हें दर्द नहीं होता**?**" बच्ची बड़े शांत भाव से बोली, "होता तो है, लेकिन जब डॉक्टर इंजेक्शन लगा रहे होते हैं, तब मैं अपना पूरा ध्यान किसी बड़ी दूर की जगह पर लगा देती हूँ। पता ही नहीं चलता कि इंजेक्शन कब लग गया।" सौरभ बोला, "अरे, यह तो कमाल की तरकीब है**!**" बच्ची बोली, "इससे भी कमाल की तरकीब यह सोचना है कि इंजेक्शन तुम्हें नहीं बल्कि किसी और को लग रहा है।"

डॉक्टर के आने पर सौरभ और तृषा ने भी इस बार यही तरकीब अपनाई और उन्हें दर्द का एहसास नहीं हुआ। जल्द ही सौरभ और तृषा स्वस्थ होकर अपने घर लौट आए और बच्ची अपने घर चली गई।

सीख: हर चीज के दो पहलू होते हैं- सकारात्मक और नकारात्मक। हमें हमेशा सकारात्मक पहलू को ही अपनाना चाहिए।

अथवा

गद्य-आकलन (प्रश्न निर्मिति): (४)

निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर ऐसे चार प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हों:

→ १. हर तरफ कौनसे त्योहार की धूम मची थी **?**

→ २. सुबह क्या बैचकर बालक ने पैसे कमाए **?**

→ ३. बालक ने दुकानदार से पैसे देकर क्या माँगा**?**

→ ४. भारत के पूर्व राष्ट्रपति कौन थे**?**

→ ५. दुनिया एक दिन इस बालक को कौन-से नाम से जानेगी ?

अथवा

विज्ञापन-लेखन:

निम्नलिखित जानकारी के आधार पर लगभग ५० से ६० शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए: (४)

→

! शिक्षक चाहिए !

सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त जगमोहनदास हाईस्कूल, घाटकोपर को हिंदी विषय हेतु शिक्षक की आवश्यकता है। कृप्या इसके लिए अपना आवेदन विद्यालय के कार्यालय में जमा करें या ई मेल करें

योग्यता : B.Ed, BA, M.A. (in Hindi)
अनुभव : कम से कम ५ वर्ष
आवेदन तिथि: १० फरवरी से २० फरवरी के बीच
संपर्क : ९३२४३६xxxx
पता : जगमोहन हाई स्कूल, पंतनगर
घाटकोपर (प.)
ईमेल आईडी: jhes@gmail.com

प्र.४. (आ) निबंध लेखन: **(४)**

किसी एक विषय पर लगभग ६० से ७० शब्दों में निबंध लिखिए:

१. शैक्षणिक यात्रा

शैक्षणिक यात्रा

हमारे स्कूल में नौवीं और दसवीं के विद्यार्थियों की शैक्षणिक यात्रा के लिए अपेक्षाकृत दुर्गम स्थलों का चुनाव किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य छात्रों को व्यावहारिक जीवन का परिचय व कठिनाइयों से सामना करने की हिम्मत प्रदान करना होता है।

पिछले ही महीने दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों को शैक्षणिक यात्रा के लिए 'करनाला पक्षी अभयारण्य' ले जाया गया। सभी विद्यार्थी जंगल, पहाड़, झरने, किले और वन्य जीवन को देखने के लिए बड़े उत्साहित थे। यह अभयारण्य हमारे विद्यालय से ४५ किलोमीटर की दूरी पर है। सुबह सात बजे हमारी बस रवाना हुई और हम बस में अंताक्षरी खेलते-खेलते करनाला पहुँच गए थे। हमारे साथ अन्य शिक्षक-शिक्षिकाओं के साथ चार स्पोर्ट्स एवं स्काउट-गाइड के शिक्षक भी थे। हमें जंगल में ट्रैकिंग करते हुए करनाला किले तक जाना था। पक्षी अभयारण्य के गेट से करनाला-फोर्ट तक की दूरी दो किलोमीटर से थोड़ी अधिक थी। स्काउट सर अनिल शिंदे ने जैसे ही सीटी बजाई सभी छात्र ट्रैकिंग के लिए तैयार हो गए। १०-१० छात्रों के कुल चार समूह बनाए गए। यह शर्त लगाई गई कि कौन-सा समूह पहले पहुँचता है। सभी समूहों को नाम दिए गए महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, रानी लक्ष्मीबाई और महाराज अशोक मैं 'महाराज अशोक' समूह में था। हर समूह रेस जीतने की कोशिश में था। हम सब चलने लगे। हमारे गाइड हमें रास्ते में आने वाले पेड़-पौधों, पक्षियों की जानकारी भी देते जा रहे थे। जंगल को इतने करीब से देखना यह मेरे जीवन का पहला अवसर था यहाँ हमने कई प्रकार के पक्षी देखे। कई पक्षी तो दुर्लभ हो चुके हैं और इन्हें केवल यहीं देखा जा सकता है। कई प्रजातियों की तितलियाँ भी हमने देखी। गिलहरी, मेंढक, गिरगिट भी देखने को मिले। मैं हरा साँप देखने को बहुत उत्सुक था। बाद में पता चला कि हमसे पहले वाले समूह ने एक साथ दो-दो हरे साँप देखे थे।

वह सितंबर का महीना था। बरसात का मौसम खत्म होने को था दोपहर हो चुकी थी। सिर पर धूप चमकने लगी थी। हम सब सोच रहे थे कि जैसे-जैसे दिन चढ़ता जाएगा; गर्मी बढ़ती जाएगी तब क्या करेंगे? तीन घंटे की ट्रैकिंग कर हम लोग आखिरकार करनाला फोर्ट पहुँच ही गए। यह किला काफी जीर्ण-शीर्ण हो चुका है। हमें लगा कि हमारा समूह पहले पहुँचा है। वहाँ जाकर देखा, तो "छत्रपति शिवाजी समूह सबसे अच्छे चबूतरे पर कब्जा जमा चुका था। हमारे बाद 'रानी लक्ष्मीबाई' और 'महाराणा प्रताप' समूह साथ-साथ पहुँचे। किले में पहुँचकर हमने अद्भुत दृश्य देखा। ऐसा लगा कि हम सबसे ऊँची जगह पर आ गए हैं। गाइड ने हमें नीचे बसे गाँवों के बारे में जानकारी दी। यहाँ खेती, बागवानी, पशुपालन आदि से लोग अपनी जीविका चलाते हैं। किले में हमने खाना खाया अंताक्षरी खेली और सबने खूब फोटो खीचे लौटते समय गाइड हमें एक गाँव में ले आया। जहाँ हमने गाँव के सरपंच के साथ गाँव का निरीक्षण किया और ग्रामीण जीवन की जानकारी हासिल की।

इस तरह वन्य जीवन और ग्रामीण जीवन की जानकारी लेते दस शैक्षणिक यात्रा का उद्देश्य पूरा किया और स्कूल लौट आए।

२. पेड की आत्मकथा:

पेड़ की आत्मकथा

आह! लगता है आज कहीं हवन-पूजा होने वाली है, तभी ये लोग मेरी टहनी तोड़कर लिए जा रहे हैं। वैसे मेरी गणना चेतन वस्तुओं में की जाती है, किंतु मानता कोई नहीं!

मैं आपको अपनी कहानी सुनाता हूँ। गर्मी का मौसम था, दादा जी के पोते ने आम खाकर गुठली को जमीन खोदकर गाड़ दिया था। मिट्टी से पोषण मिला और वर्षाऋतु में पानी से जैसे जीवन मिल गया। मैं पोषित होकर नवांकुर बन जमीन की सतह के ऊपर आ गया। उस दिन मैं अपने भाग्य पर फूला नहीं समा रहा था। दादा जी एवं बच्चे की सेवा ने आज मुझे हरा-भरा वृक्ष बना दिया है।

वृक्ष बनने के बाद से आज तक मैं पशु, पक्षी एवं प्राणीमात्र की सेवा ही करता चला आ रहा हूँ। पंखे की हवा खाकर ऊबते लोग, मेरी शरण में आकर आनंद का अनुभव करते हैं। बच्चे मेरी छाया में खेल, लड़ाई झगड़ा, नाच-गाना करके मुझे रोमांचित करते रहते थे।

एक घटना सुनाता हूँ, उस दिन तो जैसे मेरी साँसे ही अटक गई थी। एक दिन बिजली विभाग के कुछ लोग आए। कहने लगे इस वृक्ष के कारण तार में व्यवधान उत्पन्न हो रहा है, इसलिए इसे काटना पड़ेगा। मेरे जन्मदाता, जो आज ५३ वर्ष के हो चुके हैं, उनकी विनती के कारण मेरे प्राण आज भी सुरक्षित हैं। सोचता हूँ एक समय था, जब चारों ओर हरियाली थी, लेकिन आधुनिकीकरण व शहरीकरण के चलते जंगल समाप्त होते जा रहे हैं। जंगल-कटाव के कारण हमारे मौसम के चक्र में अनियमितता आती जा रही है, किंतु हम क्या कर सकते हैं? हमारा विनाश करके मनुष्य ने केवल बाढ़, भू-क्षरण एवं अकाल को ही न्यौता दिया है, इसलिए मेरा रक्षण मनुष्य के लिए महत्त्वपूर्ण है। यदि मनुष्य मेरा रक्षण करेगा, तो प्रकृति के प्रतिकूल परिवर्तन थम सकते हैं और इसका लाभ मानवजाति को होगा।

Together we will make a difference